Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर

श्री रमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
आई एस बी एम विश्वविद्यालय नवापारा (कोसमी)
वि० खण्ड – छुरा, जिला-गरियाबंद (छत्तीसगढ़) 493996
rameshnayak321@zohomail.in

शोध सारांश:

माखनलाल चतुर्वेदी, जिन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से भी जाना जाता है, आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख राष्ट्रीय कवि और पत्रकार थे। वे न केवल राष्ट्रीय चेतना के संवाहक थे, बल्कि नवजागरण काल की उपज भी थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की भावना को सशक्त किया। इस दृष्टि से वे केवल रचनाकार ही नहीं, बल्कि एक कर्मशील देशभक्त भी थे।

उनकी कविताएँ विशेष रूप से राष्ट्रीय प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना से ओत-प्रोत हैं। आचार्य वाजपेयी ने उन्हें वीर रस के स्वदेश-प्रेमी कवियों में स्थान दिया है। उनकी रचनाओं में गाँधीवादी आदर्शों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वे सरल, भावुक और मार्मिक शैली में अपनी अंतरानुभूतियों को व्यक्त करते हैं, जिससे उनकी कविताएँ सीधे हृदय को स्पर्श करती हैं। उनकी काव्य भाषा में उर्दू की प्रभावशाली शैली का भी समावेश मिलता है, जो हिंदी प्रगीत काव्य को एक नई आत्मानुभूति प्रदान करता है।

हालाँकि आधुनिक हिंदी कविता विभिन्न वादों में विभाजित रही है, माखनलाल चतुर्वेदी किसी एक वाद में सीमित नहीं रहे। कुछ विद्वान उन्हें छायावादी या राष्ट्रीय कवि मानते हैं, किंतु उनकी पहचान एक ऐसे कवि के रूप में है जो जीवन की समग्रता और स्वतंत्रता की भावना का उत्सव मनाता है। माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में ओज और माधुर्य का सुंदर समन्वय है, जो उनकी राष्ट्रभावना को केवल अतीत प्रेम तक सीमित न रखकर उसे सक्रिय संघर्ष और आत्मोत्सर्ग की भावना में परिवर्तित करता है। यही विशेषता उन्हें अन्य कवियों से विशिष्ट बनाती है।

माखनलाल एक कुशल वक्ता भी थे। जब वे बोलते थे, तो लोग शांत हो जाते थे। उनकी वक्तृत्व कला पर महात्मा गाँधी भी मुग्ध थे। गाँधी जी ने एक बार टिप्पणी की थी, "हम सब लोग तो बात करते हैं, बोलना तो माखनलाल जी ही जानते हैं।" सन् 1933 में, महात्मा गाँधी जी के हरिजन दौरे के समय जब वे मध्य प्रदेश में बाबई पहुँचे थे, तब उन्होंने कहा था, "मैं बाबई जैसे छोटे स्थान पर इसलिए जा रहा हूँ क्योंकि वह माखनलाल जी का जन्म स्थान है। जिस भूमि ने माखनलाल जी को जन्म दिया है, उसी भूमि को मैं सम्मान देना चाहता हूँ।"

माखनलाल जी अपने से भी ज्यादा हमेशा देश को ही चाहा है, प्राणों की चिन्ता तो उन्हें कभी थी ही नहीं। इसलिए उनकी 'कैसी है पहिचान तुम्हारी' कविता की पंक्तियाँ याद आती हैं -

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

"कैसी है पहिचान तुम्हारी,
राह भूलने पर मिलते हो!
प्राण, कौन से स्वप्न दिख गये,
जो बलि के फूलों खिलते हो।
कैसी है पहिचान तुम्हारी,
राह भूलने पर मिलते हो।"

'हिमतरंगिणी', 'हिमकिरीटिनी' और 'माता' में ओज, माधुर्य एवं बलिदान की अभिव्यक्ति

माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य उस युग की उपज है जब पूरा देश स्वतंत्रता संग्राम में संलग्न था। इस समय त्याग, समर्पण और देशभक्ति जीवन के प्रमुख मूल्य बन चुके थे। उनकी काव्य-रचनाओं—'हिमकिरीटिनी', 'हिमतरंगिणी' और 'माता'—में इसी राष्ट्रीय चेतना का सशक्त चित्रण मिलता है। इन काव्यों में ओज (वीरता), माधुर्य (भावनात्मक कोमलता) और बलिदान की भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

'हिमकिरीटिनी' उनकी आरंभिक कृति है, जिसमें राष्ट्रप्रेम और जागरण का स्वर प्रमुख है। 'हिमतरंगिणी' में यह स्वर और अधिक प्रखर होकर सामने आता है, जहाँ देश के लिए संघर्ष और उत्साह का भाव व्यक्त होता है। वहीं 'माता' में मातृभूमि के प्रति गहरी श्रद्धा, स्नेह और समर्पण का भाव दिखाई देता है। इन रचनाओं में युवाओं को देश के लिए बलिदान हेतु प्रेरित किया गया है। कवि पर लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी और माधवराव सप्रे का गहरा प्रभाव था, जिससे उनके काव्य में राष्ट्रीयता और त्याग की भावना और भी सुदृढ़ हुई। उनकी वैष्णव पृष्ठभूमि ने उनके काव्य को संवेदनशील और मानवीय बनाया। इन काव्यों के माध्यम से माखनलाल चतुर्वेदी ने न केवल अपने समय की चेतना को व्यक्त किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी देशभक्ति, आत्मोत्सर्ग और आदर्श जीवन के मूल्य स्थापित किए।

'हिमतरंगिणी', 'हिमकिरीटिनी', और 'माता' में ओजस्विता, मधुरता तथा त्याग का अद्भुत समन्वय

'हिमतरंगिणी', 'हिमकिरीटिनी' और 'माता' में माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में वीरता, मधुरता और त्याग की भावना का प्रभावशाली समन्वय प्रस्तुत हुआ है। ये केवल काव्य-गुण ही नहीं, बल्कि कवि के व्यक्तित्व के भी गुण होते हैं। जब ये गुण कवि के स्वभाव में विद्यमान होते हैं, तभी वे उसकी रचनाओं में स्वाभाविक रूप से प्रकट होते हैं। यदि कवि स्वभाव से ओजस्वी है, तो उसकी रचनाओं में वीरता, उत्साह और प्रेरणा के प्रसंग अत्यंत प्रभावशाली बनते हैं। वहीं, यदि उसके व्यक्तित्व में माधुर्य प्रमुख है, तो उसकी कविता में कोमलता, भावुकता और संवेदनशीलता अधिक दिखाई देती है। इस प्रकार काव्य-गुणों की प्रभावशीलता कवि के व्यक्तित्व पर निर्भर करती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में ये तीनों गुण संतुलित रूप में दिखाई देते हैं। उनके काव्य में ओज के माध्यम से देशभक्ति और संघर्ष की भावना, माधुर्य के माध्यम से भावनात्मक गहराई, तथा बलिदान के माध्यम से आत्मसमर्पण का आदर्श प्रस्तुत होता है। काव्यशास्त्र में विभिन्न विद्वानों ने काव्य-गुणों की संख्या अलग-अलग बताई है, किंतु आचार्य भामह ने माधुर्य, ओज और प्रसाद को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है। ये तीनों गुण माखनलाल जी की काव्य-रचनाओं में स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। इनके कारण उनका काव्य प्रभावशाली, आकर्षक तथा प्रेरणादायक बन गया है।

काव्य-गुणों की संख्या के संबंध में विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। आचार्य भरत ने काव्य के दस गुण माने हैं, परंतु माधुर्य, ओज और प्रसाद को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। प्राचीन आचार्यों में आचार्य भामह ने भी इन तीन प्रमुख गुणों का प्रतिपादन किया और इन्हें काव्य की श्रेष्ठता का आधार माना।

"माधुर्यौजप्रसादख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश"

क) माधुर्य गुण:-

आचार्य भरत ने माधुर्य को काव्य की श्रवण-सुखदता माना है। आचार्य दण्डी के अनुसार काव्य में रस की सरस और मनोहारी अभिव्यक्ति ही माधुर्य कहलाती है। वहीं आचार्य वामन ने समासयुक्त भाषा तथा विशिष्ट और वैचित्र्यपूर्ण उक्ति को माधुर्य का आधार माना है। (1)" ध्वनि-सिद्धांत के आचार्यों के अनुसार जो गुण सहृदय के हृदय को द्रवित कर दे, वही माधुर्य कहलाता है। आचार्य मम्मट ने भी हृदय को भावविभोर करने वाली विशेषता को माधुर्य गुण माना है। इस प्रकार माधुर्य का तात्पर्य श्रवण-सुखदता, समासरहित सरल अभिव्यक्ति, उक्ति-वैचित्र्य, कोमलता, भावप्रवणता तथा चित्त को द्रवित करने की क्षमता से है। (2) जिस काव्य-गुण के कारण हृदय आनंद से द्रवित होकर भावमग्न हो जाए, वही माधुर्य गुण कहलाता है। (3)

माधुर्यगुण में ट,ह, ड तथा छ वर्ण का प्रयोग वर्जित है। यह समास रहित अथवा अल्पसमास युक्त होते है।

ख) ओज गुण:-

"काव्य का वह गुण जो श्रोताओं या पाठकों के मन में उत्साह, वीरता, पराक्रम और आवेश का संचार करता है, ओज गुण कहलाता है। यह गुण विशेष रूप से वीर रस के काव्य में पाया जाता है। वीर रस के अतिरिक्त रौद्र तथा वीभत्स रस में भी ओज गुण की प्रभावपूर्ण उपस्थिति देखी जाती है। (4)" परंपरागत काव्यशास्त्र के अनुसार ओज गुण में कठोर वर्णों, संयुक्ताक्षरों, दीर्घ समासों तथा विशेष वर्ण-योजनाओं का प्राधान्य रहता है। ऐसे शब्द और पद काव्य में शक्ति, उत्साह तथा वीरता का संचार करते हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की राम की शक्ति पूजा ओज गुण का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है।

किन्तु माखनलाल जी के काव्य में ओज का स्वरूप कुछ भिन्न दिखाई देता है। उन्होंने न तो अत्यधिक समासयुक्त भाषा का प्रयोग किया है और न ही क्लिष्ट शब्दों एवं संयुक्ताक्षरों की भरमार की है। फिर भी उनकी कविता में अद्भुत ओज विद्यमान है। इसका मुख्य कारण उनका तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व है, जिसकी झलक उनकी काव्य और

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

गद्य—दोनों रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी लेखनी में निहित ऊर्जा, राष्ट्रीय चेतना और प्रेरक भाव ही उनके काव्य को ओजस्वी बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, उन्होंने अपनी सम्पादकीय में एक जगह लिखा है: "अंग्रेज़ी शिक्षा और उसके प्रभाव ने हमारे उदार भाइयों को इतना निष्क्रिय और संवेदनहीन बना दिया है कि अब समय आ गया है कि उसकी दास मानसिकता को त्याग दिया जाए। भारत अब कमजोर और असहाय लोगों की भूमि नहीं रहा, जहाँ कोई भी व्यक्ति अपनी शक्ति के बल पर आसानी से प्रभुत्व स्थापित कर सके। अब देश में आत्मसम्मान, जागरूकता और प्रतिरोध की भावना विकसित हो चुकी है।"

दृष्टांत के लिए उनकी प्रसिद्ध काव्य पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं:

“चल रही घड़ियां,
चले नभ के सितारे,
चल रही नदियां,
चले हिम खंड प्यारे।
चल रही है सांस,
फिर तू ठहर जायें!
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाये?(5)”

ग) बलिदान:-

माखनलाल चतुर्वेदी जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अनासक्त कर्मयोगी, वीर, योध्दा की तरह जीवन बिताने वाले कलम के सिपाही थे। उनकी भावना राष्ट्रप्रेम की पुनीत भावनाओं से परिपूर्ण थी। देश के लिये जीना और देश के लिये मरना उनकी भावना का सर्वोपरि विषय था। उनके शब्दों मे “मेरा जीवन और मृत्यु दोनों ही अपने प्रिय देश को समर्पित हैं। (6)” से स्पष्ट है कि उनके हृदय में भारतभूमि के प्रति अगाध प्रेम और अटूट श्रद्धा थी। राष्ट्र ही उनके जीवन का सर्वोच्च आदर्श और आराध्य था। देशभक्ति की यह प्रबल भावना उनकी समस्त काव्य-रचनाओं में सजीव रूप से अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्रहित के लिए समर्पित कर दिया था, इसलिए त्याग, बलिदान और समर्पण के भाव उनके काव्य के प्रमुख स्वर बन गए। उनके काव्य में मातृभूमि के प्रति निष्ठा, प्रेम और आत्मोत्सर्ग की भावना बार-बार व्यक्त होती है। विशेषतः समर्पण में ये भाव अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली रूप में प्रकट हुए हैं, जो पाठकों के हृदय में देशप्रेम और राष्ट्रसेवा की प्रेरणा जगाते हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी जी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के उन साहित्यकारों में अग्रगण्य थे जिन्होंने अपने जीवन और साहित्य दोनों को राष्ट्रहित के लिए समर्पित कर दिया। वे केवल कवि ही नहीं, बल्कि एक जागरूक स्वतंत्रता

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

सेनानी, निष्ठावान कर्मयोगी और निर्भीक पत्रकार भी थे। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल आधार राष्ट्रप्रेम था। मातृभूमि के प्रति उनकी असीम श्रद्धा, समर्पण और अनुराग उनकी समस्त रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

उनके लिए भारत केवल जन्मभूमि नहीं, बल्कि आराध्य और पूज्य सत्ता था। यही भावना उनके प्रसिद्ध कथन—"मेरे जीने-मरने का धन, प्यारा पूज्य हमारा देश" (6) में मुखरित होती है। इस पंक्ति से स्पष्ट है कि राष्ट्र ही उनके जीवन का सर्वोच्च मूल्य और साधना का केंद्र था। देशप्रेम उनके व्यक्तित्व का इतना अभिन्न अंग था कि उसकी छाप उनके काव्य के प्रत्येक स्वर में सुनाई देती है।

चतुर्वेदी जी ने राष्ट्र के लिए जीने और आवश्यक होने पर उसके लिए बलिदान देने को जीवन का परम कर्तव्य माना। परिणामस्वरूप उनके काव्य में त्याग, बलिदान, समर्पण और राष्ट्रीय चेतना के भाव अत्यंत सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। उनके साहित्य में देशभक्ति केवल भावुकता नहीं, बल्कि कर्म, संघर्ष और आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा बनकर उपस्थित होती है। इस प्रकार उनका काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का सशक्त दस्तावेज़ और राष्ट्रप्रेम का जीवंत उद्घोष बन जाता है।उनके काव्य संग्रह "समर्पण" में यह भावना स्पष्ट दिखाई देती है

"उठो बहिना, आज राखी बांध दो श्रृंगार कर दो,
उठों तलवारों, कि राखी बंध गई झंकार कर दो।(7)"

इसी प्रकार की भावना उनकी "सिपाहिनी" नामक कविता ने भी है-

"चुड़ियाँ बहुत हुई कलाइयों पर
प्यारे, भुज-दंड सजा दो,
तीर कमानों से सिंगार दो,
जरा जिरह बखतर पहना दो।(8)"

माखनलाल चतुर्वेदी जी की प्रारम्भिक रचनाओं में राष्ट्रीय भावना का जो सशक्त स्वर उभरकर सामने आता है, वह उनके व्यक्तित्व और युगबोध दोनों का परिचायक है। उनकी कविताएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं थीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की चेतना को जन-जन तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम भी थीं। उनमें राष्ट्रप्रेम, आत्मबलिदान और संघर्षशीलता का ऐसा ओजपूर्ण समन्वय मिलता है, जिसने तत्कालीन युवा पीढ़ी को गहराई से प्रभावित किया।

उनकी काव्यधारा में मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा, स्वतंत्रता के लिए उत्कट लालसा तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का प्रबल संदेश निहित है। उनकी कविताओं को पढ़कर युवाओं के मन में देशसेवा का उत्साह जागृत होता था और वे राष्ट्रहित में त्याग एवं बलिदान के लिए प्रेरित होते थे। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ केवल काव्य-सौंदर्य तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय जागरण का सशक्त घोष बन गईं।

चतुर्वेदी जी ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस में आत्मविश्वास, स्वाभिमान और कर्तव्यबोध का संचार किया। उनकी कविताओं में व्यक्त वीरता और समर्पण की भावना ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक और

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

भावनात्मक शक्ति प्रदान की। इस प्रकार उनका काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का जीवंत दस्तावेज़ तथा देशभक्ति का अमर संदेश बनकर प्रतिष्ठित हुआ।

"मुझे भूलने में सुख पाती, जग की काली स्याही,
दासी दूर, कठिन सौंदा है मैं हूं एक सिपाही।
धीरज रोग, प्रतीक्षा चिन्ता, सपने बने तबाही
कर तैयार! द्वार खुलने दे, मैं हूँ एक सिपाही! (9)"

माखनलाल चतुर्वेदी जी ऐसे राष्ट्रीय कवि थे जिनके साहित्य का मूल स्वर राष्ट्रभक्ति, राष्ट्राराधना और आत्मोत्सर्ग की भावना से अनुप्राणित है। उन्होंने राष्ट्र को देवता तथा मातृभूमि को पूजनीय शक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए उसके प्रति पूर्ण समर्पण का संदेश दिया। उनके साहित्य में राष्ट्रसेवा, त्याग, बलिदान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा अत्यंत प्रभावशाली रूप में व्यक्त हुई है। इसी कारण उनके साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य की संज्ञा देना सर्वथा उचित प्रतीत होता है।

उनकी अधिकांश रचनाएँ उस काल में लिखी गईं जब भारत ब्रिटिश शासन की दासता से जूझ रहा था और देशवासी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर रहे थे। ऐसे संघर्षपूर्ण वातावरण ने उनके व्यक्तित्व और काव्य दोनों को गहराई से प्रभावित किया। उनके चिंतन का केंद्र केवल भारत और उसकी स्वतंत्रता थी। मातृभूमि की मुक्ति का स्वप्न उनके मन में निरंतर जाग्रत रहता था, जिसके परिणामस्वरूप उनके काव्य में स्वाभाविक रूप से ओज, उत्साह और राष्ट्रीय चेतना का समावेश हुआ।

चतुर्वेदी जी ने अपना तन, मन और जीवन राष्ट्रहित के लिए समर्पित कर दिया था। यही कारण है कि उनकी कविताओं में त्याग, वीरता, आत्मबलिदान और देशप्रेम की भावनाएँ अत्यंत सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। उनका काव्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरक वाणी और राष्ट्रीय जागरण का प्रभावशाली माध्यम बन गया। तभी तो देश के युवकों को उन्होंने कहा:

"उठो भुजाओं में अर्जुन का
रक खौलने दो ऐ मानी,
बल की बलि की धाराओं का
संगम बन जाओ सेनानी।(10)"

उनके व्यक्तित्व और काव्य में विद्यमान ओज तथा उत्साह का आभास निम्न उदाहरण से सहज ही प्राप्त होता है-

"बंदी सोते हैं, है घर-घर स्वासों का,
दिन के दुख का रोना है निश्वासों का,
अथवा स्वर है लोहे के दरवाजों का,
बूटों का या संत्री की आवाजों का,

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

क्या हुई बावली ? अर्धरात्रि को चीखी, कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की ज्वालाए है दीखी? कोकिल बोलो तो! (11)"

माखनलाल जी के व्यक्तित्व में देशभक्ति और बलिदान का भाव इस सीमा तक रचा-बसा था कि प्रकृति के सान्निध्य में भी उनकी वाणी राष्ट्रसमर्पण और आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा से ओत-प्रोत दिखाई देती है। उनकी कविताओं में प्रकृति भी मानो देशहित में बलिदान का संदेश देती प्रतीत होती है। इस भावना की अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है—

"मैं जमी कि जैसे मीठा-सा, प्रिय का कोई संदेश जगा!
मधु बहा कि जैसे सन्तों का, धीमे-धीमे संदेश जगा?
मै 'बलि का गान' सुनाती हूँ , प्रभु के पथ की बनकर फकीर,
माँ पर हंस-हंस बलि होने में खिंच हरी रहे मेरी लकीर"

चतुर्वेदी जी का बलिदान-सिद्धांत किसी तात्कालिक राजनीतिक परिस्थिति या भावावेग की उपज नहीं था, बल्कि उसके पीछे एक गहरी दार्शनिक चेतना और जीवन-दृष्टि सक्रिय थी। उन्होंने बलिदान को केवल राष्ट्र की स्वतंत्रता प्राप्ति का साधन नहीं माना, बल्कि उसे जीवन के उच्चतम आदर्श और मानवीय कर्तव्य के रूप में स्वीकार किया। उनकी यह विचारधारा अनुभव, चिंतन और कर्म के समन्वय से निर्मित हुई थी।

स्वाधीनता-संग्राम के उथल-पुथल भरे वातावरण में उनके आदर्शों को व्यवहारिक धरातल पर अपनी सार्थकता सिद्ध करनी पड़ी। संघर्ष, त्याग और कष्टों की अग्नि में तपकर उनकी राष्ट्रनिष्ठा और अधिक दृढ़ तथा प्रखर बन गई। यही कारण है कि उनके काव्य में बलिदान की भावना केवल उपदेश के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के सत्य के रूप में अभिव्यक्त होती है।

उनकी आत्मानुभूति से उद्भूत इस दार्शनिक दृष्टि ने उनकी भाषा को असाधारण शक्ति, गंभीरता और ओज प्रदान किया। उनके शब्दों में ऐसी प्रेरक ऊर्जा विद्यमान है जो पाठक के मन में उत्साह, साहस और आत्मसमर्पण की भावना जागृत कर देती है। इस प्रकार उनके काव्य का ओज केवल भाषिक संरचना का परिणाम नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व, चिंतन और जीवन-संघर्ष की सघन अनुभूति का प्रतिफल है। उन्हीं के शब्दों में - "इस कथन में कवि की राष्ट्रनिष्ठा, आत्मविश्वास और आत्मबलिदान की भावना व्यक्त हुई है। वह देशहित के लिए स्वयं को समर्पित करने और आवश्यक होने पर अपना सिर तक अर्पित कर देने की तत्परता प्रकट करता है। (12)"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने तो यह कहा है कि **- "जब हृदय साहस और प्रसन्नता से भर उठता है, तब उत्साह की भावना उत्पन्न होती है। (12)"** यहीं माखनलाल जी के लेखन में जगह-जगह चरितार्थ है जब वे कहते हैं।

"सूझो में, सांसों में, संगम में, श्रम में, ज्वारों में,
जीने में, मरने में, प्रतिभा में, आविष्कारों में।
सागर की बाहे लांघे है, तट चुम्बित भू-सीमा,

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

तू भी सीमा लांघ, जगा एशिया, उठा भुज-भीमा। (13)"

हिमतरंगिणी, हिमकिरीटिनी तथा माता इत्यादि काव्य कृतियों में राष्ट्रीय काव्यधारा को सशक्त रूप:

माखनलाल चतुर्वेदी जी की हिमतरंगिणी, हिमकिरीटिनी तथा माता जैसी कृतियाँ उनकी प्रखर राष्ट्रीय चेतना की परिचायक हैं। इनमें देशप्रेम, त्याग और बलिदान की भावना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है। छायावाद काल में जहाँ अधिकांश कवि श्रृंगार और प्रकृति-चित्रण में रत थे, वहीं माखनलाल जी ने राष्ट्रभक्ति को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाया। उनके काव्य में ओज, उत्साह और माधुर्य के साथ-साथ स्वतंत्रता-संग्राम की प्रेरणा भी विद्यमान है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय जागरण की सशक्त अभिव्यक्ति बन गई हैं।

"काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर कल्पना काली,
मेरी काल कोठरी काली,
टोपी काली कमली काली
मेरी लोह श्रृंखला काली,
पहरे की हुंकृति की व्याली,
जिस पर है गाली ऐ आली।(14)"

'कैदी और कोकिला' माखनलाल चतुर्वेदी जी की राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत एक उत्कृष्ट कविता है। इसमें कोयल को केवल श्रृंगार का प्रतीक न मानकर स्वतंत्रता और जागरण का संदेशवाहक बनाया गया है। कवि ने अपनी मौलिक दृष्टि से उसे राष्ट्रमुक्ति की प्रेरणा देने वाले स्वर के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में देशप्रेम और स्वतंत्रता की आकांक्षा इतनी प्रबल थी कि वृद्धावस्था में भी राष्ट्रीय संकटों ने उनके मन में वही उत्साह, वेदना और संघर्ष-भावना उत्पन्न की, जो उनके युवाकाल की पहचान थी।

युवाओं को ललकारते हुए उन्होंने सपाट बयानी में ओजपूर्ण स्वर में कहा:

"गंगा मांग रही है मस्तक,
जमना मांग रही है सपने
आज जवानी स्वंय टटोले,
सिर हवेलियाँ अपने अपने।(15)"

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

पाकिस्तान के आक्रमण का दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए भारतीयों ने अपने शौर्य और बलिदान की अमिट छाप विश्व पर अंकित की। कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैली राष्ट्रीय एकता ने देश की अखंडता और सामर्थ्य को सुदृढ़ रूप से स्थापित किया। इसका चित्रण कवि के इन शब्दों में दृष्टव्य है.

"केरल से कश्मीर तलक हम हैं,
हम भाई-भाई है,
कावेरी, कृष्णा कि नर्मदा,
गंगा जमना सिंधु रहे,
हमे न तोड़ सकेगा काई,
हम माँ-जाये बंधु रहे।(16)"

अहिंसा मूलक आंदोलन का समर्थन करते समय भी कवि के अंतर्मन में एक कसक है जो विद्रोह के लिए टीसती रहती है। 'जवानी' शीर्षक कविता में विद्रोह का आवेश भरा स्वर है जो शौर्य और पराक्रम को ललकारता है। कविता पाठ के साथ ही पाठक की शिराओं में रक्त की गति बढ़ जाती है। जवानी का ज्वार-भाटा उफनने लगता है। जवानी के लिए पृथ्वी क्या है? जवान योद्धा इस धरा को तरबूज की दो फाँक की तरह काटकर फेंक सकता है।

"पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरू कर लें,
भूमि-सा तु पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ है, उठ री जानी
विश्व है असि का?
नहीं संकल्प का है
हर प्रलय का कोण
काया-कल्प का है,
फूल गिरते, शूल
शिर ऊँचा लिये है।
रसों के अभिमान
को निरस किये है।
खून हो जाये न तेरा देख, पानी
मरण का त्यौहार, जीवन की जवानी। ?(17)"

'एक भारतीय आत्मा' की राष्ट्रीय कविताओं में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध जो तीखा प्रतिरोध और निर्भीक स्वर मिलता है, वह हिन्दी साहित्य में विरल है। विशेषतः कैदी और कोकिला में कवि ने अपने कारावास के अनुभवों को

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

अत्यंत स्पष्टता और साहस के साथ अभिव्यक्त किया है। इस कविता में ब्रिटिश शासन की क्रूरता, दमन और अमानवीय व्यवहार का सजीव चित्रण मिलता है।

कवि ने जेल की यातनाओं—हथकड़ियों, बेड़ियों और कठोर श्रम—को निराशा का प्रतीक न मानकर स्वतंत्रता-प्राप्ति के संघर्ष की आवश्यक प्रक्रिया के रूप में देखा है। बंदी की पीड़ा में भी स्वाधीनता का स्वप्न जीवित है। कविता में कोकिला स्वतंत्रता, स्वच्छंदता और मुक्ति की प्रतीक बनकर उभरती है, जिसके माध्यम से कवि पराधीन भारत को स्वतंत्रता का संदेश देता है।

"क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूं ? जीवन की तान,
मिट्टी पर अंगुलियों से लिक्खे गान,
हू मोट खींचता लगा पेट पर जुआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुंआ (18)"

इस कविता के सन्दर्भ में दिनकर लिखते है –"सन् 1929 में, जब भगत सिंह, यतीन्द्रनाथ दास और अन्य क्रांतिकारी बोरस्टल जेल में लंबा अनशन कर रहे थे, तब पूरे देश में चिंता और आक्रोश का वातावरण था। ऐसे समय माखनलाल जी की कविता 'मरण-त्यौहार' प्रकाशित हुई। इस कविता में क्रांतिकारियों के त्याग, ब्रिटिश शासन के अत्याचार और देश की पीड़ा का अत्यंत मार्मिक चित्रण है। मोमबत्ती के धीरे-धीरे पिघलने के रूपक द्वारा कवि ने अनशनरत युवकों के बलिदान को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि यह कविता जनमानस को गहराई तक झकझोर गई। (19)"

माखनलाल जी की कविता का सबसे उज्जवल अंश उसकी वीर रसात्मता स्वदेश प्रेम की अभिव्यंजना करने वाली रचनाओं में उजागर होता है। इन वीर रसात्मक कविताओं को मात्र समय की पुकार का प्रतिशत नहीं माना जा सकता और जैसा कि दिनकर ने अपनी राष्ट्रीय कविताओं के लिये कहा है- "माखनलाल जी की देशभक्ति-प्रधान रचनाएँ किसी बाहरी दबाव या समय की थोपित परिस्थितियों का परिणाम नहीं हैं, बल्कि उनकी स्वाभाविक रचनात्मक चेतना की उपज हैं। राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता की भावना उनकी सृजनशीलता का अभिन्न अंग थी। नवजागरण की चेतना और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की ऊर्जा से प्रेरित उनकी रचनाएँ भारतीय जनमानस में जागृति, स्वाधीनता और मुक्ति की भावना का संचार करती हैं। (20)"

"विश्व साहित्य में देशप्रेम पर आधारित रचनाओं का इतना व्यापक और सशक्त स्वरूप विरल ही देखने को मिलता है। राष्ट्रीय काव्य भारतीय साहित्य की एक विशिष्ट पहचान है। हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य को एक सुदृढ़ धारा और स्वतंत्र स्वरूप प्रदान करने का महत्वपूर्ण श्रेय माखनलाल चतुर्वेदी जी को जाता है। यहाँ राष्ट्रीय काव्य का आशय केवल तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं पर आधारित सामयिक रचनाओं से नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना और जनजागरण से प्रेरित साहित्य से है। (21)"

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

उन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज़ को बुलंद किया और युवाओं से देश की स्वतंत्रता के लिए मर-मिटने का आह्वान किया। उनकी रचनाओं में सशक्त भावनाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नया बदलाव माखनलाल जी से ही प्रारंभ हुआ है।

“जाओ, जाओ, जाओ प्रभु को पहुँचाओ स्वदेश संदेश।
गोली से मारे जाते हैं भारतवासी हे सर्वेश ॥”

ये पंक्तियाँ सन् 1920 ई. में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के संदर्भ में शहीदों को याद करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी जी लिखते हैं। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख स्तम्भ हैं। माखनलाल चतुर्वेदी जी समसामयिक युगदृष्टा एवं राष्ट्रीय स्वर को उजागर करने वाले सच्चे राष्ट्रीय कवि थे। उनके काव्य में अनन्य देश-प्रेम और निच्छल समर्पण की भावना है। यही देश-प्रेम कालांतर में उनके जीवन का एक शक्तिशाली स्वर बन गया। 'पुष्प की अभिलाषा' उनकी सर्वाधिक चर्चित कविता रही और इसके लिए उन्हें सागर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट्. की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, अपने काव्य संग्रह 'हिमतरंगिणी' के लिए उन्हें सन् 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। देश-प्रेम से ओत-प्रोत उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' को कोई कभी नहीं भूल सकता है।

“ चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं, प्रेमी-माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नहीं, सम्राटों के शव, पर हे हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढ़ू भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।(22)”

अतः, माखनलाल चतुर्वेदी जी के केवल प्रारम्भिक काव्य में ही नहीं, बल्कि उनकी समस्त रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का सशक्त स्वर सुनाई देता है। स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर राष्ट्रप्रेम की गहरी छाप थी। यही कारण है कि उनकी कविताओं में ओज, माधुर्य, त्याग, बलिदान और राष्ट्रीय भावना का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है, जो उन्हें हिन्दी के प्रमुख राष्ट्रीय कवियों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

माखनलाल जी के काव्य में बलिदान, समर्पण, विद्रोह, गाँधीवादी दृष्टि, वीर-पूजा तथा प्रेम-आराधना के स्वर प्रमुख हैं। देश की स्वतंत्रता के लिए कृतसंकल्प लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक से 'दादा' माखनलाल प्रभावित थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के संपर्क में आने के बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। वे कई बार जेल गए। बिलासपुर में सन् 1922 में भड़काऊ भाषण देने के लिए उन्हें जेल जाना पड़ा। इसी दौरान उन्होंने बिलासपुर जेल में 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की रचना की। उन्होंने अपनी रचनाओं से जनमानस को स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए उत्प्रेरित किया। 'कर्मवीर' में उनके द्वारा लिखे गए लेखों ने अंग्रेज़ सरकार की नींद उड़ा दी थी।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

माखनलाल जी का मानना था कि विदेशी शोषण और अत्याचार के ख़िलाफ़ जिस व्यक्ति के हृदय में ज्वाला न धधकें, तो वह कैसा भारतीय है? उनका जीवन ही निरर्थक है, वह मृत सदृश है:

“द्वार बलि का खोल
चल भूडोल कर दे
एक हिम-गिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसलकर, अपने इरादों-सी, उठाकर,
दो हथैली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें
रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी।
जांच कर, तू सीस दे-देकर जवानी ”

माखनलाल चतुर्वेदी की भाषा और शैली पर यह आरोप लगाया गया है कि उनकी भाषा कहीं-कहीं असंगठित और व्याकरण की दृष्टि से शिथिल है। फिर भी वे भाषा-शिल्प के प्रति सजग थे और उनके प्रयोग भले सर्वस्वीकृत न हों, उनकी मौलिकता निर्विवाद है। वे एक लोकप्रिय कवि, प्रभावशाली पत्रकार और कुशल हिंदी लेखक थे।

उनकी रचनाओं की विशेषता सरल भाषा और ओजपूर्ण अभिव्यक्ति है। उनके काव्य में राष्ट्रीयता बाह्य स्वरूप के रूप में उपस्थित है, जबकि रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा है। उन्होंने अपने जीवन में निरंतर संघर्ष किया और सदैव दूसरों के लिए सुख-समृद्धि की कामना की।

30 जनवरी 1968 को उनका निधन हो गया, किंतु उनकी साहित्यिक विरासत आज भी प्रेरणास्रोत बनी हुई है।

ऐसे 'एक भारतीय आत्मा' को शत-शत नमन करते हुए, आइए उनकी कविता 'दीप से दीप जले' के अनुसार देश-प्रेम का, मानवता का दीप जलाएँ।

“सुलग-सुलग री जोत दीप से दीप मिलें
कर-कंकण बज उठे, भूमि पर प्राण फलें।
युग के दीप नए मानव, मानवी ढलें
सुलग-सुलग री जोत! दीप से दीप जलें।।”

निष्कर्ष:

माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर अत्यंत प्रखर, जीवंत और प्रेरणादायी रूप में अभिव्यक्त होता है। उनके काव्य और गद्य में देशप्रेम केवल भावनात्मक अनुभूति नहीं, बल्कि एक सक्रिय संकल्प और

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

कर्मशील दृष्टि के रूप में उपस्थित है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से जनमानस में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और त्याग की भावना को जागृत किया। उनके शब्दों में ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति को राष्ट्रहित में समर्पण के लिए प्रेरित करती है।

उनकी रचनाओं में गाँधीवादी आदर्श—सत्य, अहिंसा और आत्मबल—स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जिससे उनकी राष्ट्रीयता संतुलित और नैतिक आधार पर स्थापित होती है। वे युवाओं को राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित करते हैं और बलिदान को उच्चतम आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके साहित्य में देशप्रेम, जातीय एकता, वर्तमान के प्रति असंतोष और अतीत के प्रति श्रद्धा जैसे भाव भी सशक्त रूप से व्यक्त हुए हैं। इन भावों के माध्यम से उन्होंने जनता के भीतर जागरूकता और राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ किया। इस युग की कृतियों में राष्ट्रीयता के अनेक तत्वों का समावेश मिलता है, और उस दौर के कवि भारत माता के सच्चे उपासक के रूप में उभरते हैं। मातृभूमि की वंदना उनके लिए केवल काव्य-विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय धर्म थी।

निष्कर्षतः, माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना का सशक्त दर्पण है, जिसने न केवल अपने समय को दिशा दी, बल्कि भारतीय साहित्य और इतिहास को भी स्थायी गौरव प्रदान किया।

सन्दर्भ सूची :

1) भारतीय काव्यशास्त्र के सिध्दांत: राजकिशोर सिंह, पृ. क्र. - 141
2) हिन्दी साहित्य कोष, पृ. क्र. - 298,
3) काव्य प्रकाश, पृ. क्र. - 8/68 (आहलदकत्वं माधुर्य श्रृंगारे द्रुतिकरणम्),
4) काव्य प्रकाश, पृ. क्र. -70,
5) माखनलाल चतुर्वेदी हिनकिरीटिनी, पृ. क्र. -107,
6) डॉ. भगवानदास तिवारी: संदेश (जनवरी 1989) पृ. क्र. - 57
7) श्रीकांत जोशी: रचनावली भाग-6, पृ. क्र. -289
8) माखनलाल चतुर्वेदी: हिमकिरीटिनी, पृ. क्र. -131
9) माखनलाल चतुर्वेदी: हिमकिरीटिनी, पृ. क्र. - 54-55
10) श्रीकान्त जोशी: रचनावली भाग-7, पृ. क्र. -210,
11) माखनलाल चतुर्वेदी: हिमकिरीटिनी, पृ. क्र. - 25
12) श्रीकान्त जोशी: रचनावली भाग-5, पृ. क्र. -151,
13) श्रीकान्त जोशी रचनावली भाग-6, पृ. क्र. -252
14) माखनलाल चतुर्वेदी हिंमतरंगिनी , पृ. क्र. - 27
15) श्रीकान्त जोशी रचनावली भाग-7, पृ. क्र. -210
16) श्रीकान्त जोशी रचनावली भाग-7, पृ. क्र. - 18

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-6 | June-2026 | Page 01-14

17) माखनलाल चतुर्वेदीः हिमकिरीटिनी, पृ. क्र. -107-108

18) माखनलाल चतुर्वेदीः हिमकिरीटिनी, पृ. क्र. - 26

19) श्रीकांत जोशीः माखनलाल चतुर्वेदी- यात्रा पुरुष, पृ. क्र. -135-136

20) शिवकुमार मिश्रः संदेश (मध्यप्रदेश जनवरी 1989), पृ. क्र. - 94

21) श्रीकांत जोशी-यात्रा पुरुष: (पं. नन्ददुलारे वाजपेयी) , पृ. क्र. - 248

23) माखनलाल चतुर्वेदीः पुष्प की अभिलासा कविता (हिमतरंगिनी)